By Dr. Shailesh Kumar
Deptt. of Economics
Bela Gough College
Lucknow

8.7.20

उपभोग फलन (The consumption function)

अर्थ : उपभोग फलन केन्जवादी अर्थशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण औजार है। इस अध्याय में उपभोग फलन, उसकी तकनीकी विशेषताओं, उसके महत्त्व और उसके सापेक्ष तथा निरपेक्ष निर्धारकों के साथ-साथ केन्ज के उपभोग के मनोवैज्ञानिक नियम पर विचार किया गया है।

उपभोग फलन अथवा उपभोग प्रवृत्ति, आय - उपभोग सम्बन्ध को दर्शाता है। यह "कुल उपभोग तथा समस्त राष्ट्रीय आय, इन दो समूहों के बीच फलनात्मक संबंध है।" प्रतीकात्मक रूप से इस संबंधों को यों प्रकट किया जाता है, $C = f(Y)$ यहाँ C उपभोग है, Y आय है तथा f फलनात्मक संबंध है। इस प्रकार, उपभोग फलन C तथा Y के बीच फलनात्मक संबंध को प्रकट करता है। जहाँ C, f पर निर्भर है और Y एक स्वतंत्र 'चर' है। अर्थात C को Y निर्धारित करता है। यह संबंध इस धारणा पर आधारित है कि अन्य बातें समान रहती हैं, इसलिए केवल आय उपभोग संबंध पर ही विचार किया जा सकता है और उपभोग पर पड़ने वाले सभी प्रभावों को स्थिर मान लिया जाता है।

वास्तव में, उपभोग प्रवृत्ति अथवा उपभोग फलन आय के विभिन्न स्तरों के अनुरूप उपभोग व्यय की विविध मात्राओं की अनुसूची दी जा रही है।

इस तालिका से स्पष्ट है कि उपभोग, आय का बढ़ता हुआ फलन है क्योंकि आय में वृद्धि के साथ-साथ उपभोग व्यय बढ़ता जाता है। यहाँ दिखाया गया है कि जब मंदी के

Scanned by CamScanner

दौरान आय शून्य होती है, तो लोग अपनी पहली बचत से उपभोग पर व्यय करते हैं क्योंकि जीवित रहने के लिए उन्हें खाना तो पड़ेगा ही।

आय (Y)	उपभोग C=f(Y)
0	20
60	70
120	120
180	170
240	220
300	270
360	320

उपभोग अनुसूची
(रु. करोड़ में)

जब अर्थव्यवस्था में 60 करोड़ रु. की मात्रा में आय प्रजनित होती है, तो वह समाज के उपभोग व्यय को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होती और परिणामतः उपभोग व्यय की रु. 70 करोड़ की राशि आय के रु 60 करोड़ से बढ़ जाती है। (रु. 10 करोड़ बचत में से खर्च करने पड़ते हैं।) जब उपभोग व्यय तथा आय दोनों ही रु. 120 करोड़ पर पहुंच कर समान हो जाते हैं; तो यह आधारभूत उपभोग स्तर (basic consumption level) बन जाता है। इसके बाद, आय को 60,60 करोड़ रु. की मात्राओं में और उपभोग व्यय को 50,50 करोड़ रु. की मात्राओं में बढ़ता हुआ दिखाया गया है। इसका मतलब है कि, जैसा कि केन्ज ने माना है, अल्पकाल के दौरान उपभोग फलन स्थिर होता है।

चित्र 1 में आरेखीय ढंग से उपभोग फलन को स्पष्ट किया है गया है। इस चित्र में आय को क्षैतिज अक्ष पर और उपभोग

Scanned by CamScanner

को अनुलम्ब-अक्ष पर मापा गया है। 45° पर उठने वाली रेखा, एकता-रेखा (Unity line) है, जहाँ सब स्तरों पर आय तथा उपभोग बराबर है। वक्र C रेखीय उपभोग फलन है, जो इस धारणा पर आधारित है कि उपभोग में समान मात्राओं में (रु·50 करोड़) परिवर्तन होता है। इसका ऊपर की ओर दाएँ को ढालू होना प्रकट करता है कि उपभोग आय का बढ़ता हुआ फलन है। B: समभेदन बिन्दु (Break-even point) है, जहाँ $C=Y$ अथवा $OY_1 = OC_1$। जब आय बढ़कर OY_2 हो जाती है, तो उपभोग बढ़कर OC_2 तक पहुँच जाता है, परन्तु आय में वृद्धि की अपेक्षा उपभोग में वृद्धि कम होती है अर्थात् $C_1C_2 < Y_1Y_2$। आय के जिस भाग का उपभोग नहीं किया जाता, वह बचत है जैसे 45° की रेखा तथा वक्र C के बीच अनुलम्ब दूरी (SS') द्वारा दिखाया गया है। "इस प्रकार, उपभोग फलन केवल उपभोग पर व्यय की गई राशि को ही नहीं बल्कि बचत की मात्रा को भी मापता है। इसका कारण यह है कि उपभोग प्रवृत्ति वस्तुतः उपभोग न करने की प्रवृत्ति मात्र ही तो है। इसलिए 45° की रेखा शून्य-बचत रेखा माना जा सकता है और, वक्र C की आकृति तथा स्थिति उपभोग तथा बचतों में आय के विभाजन को व्यक्त करती है।"

Scanned by CamScanner

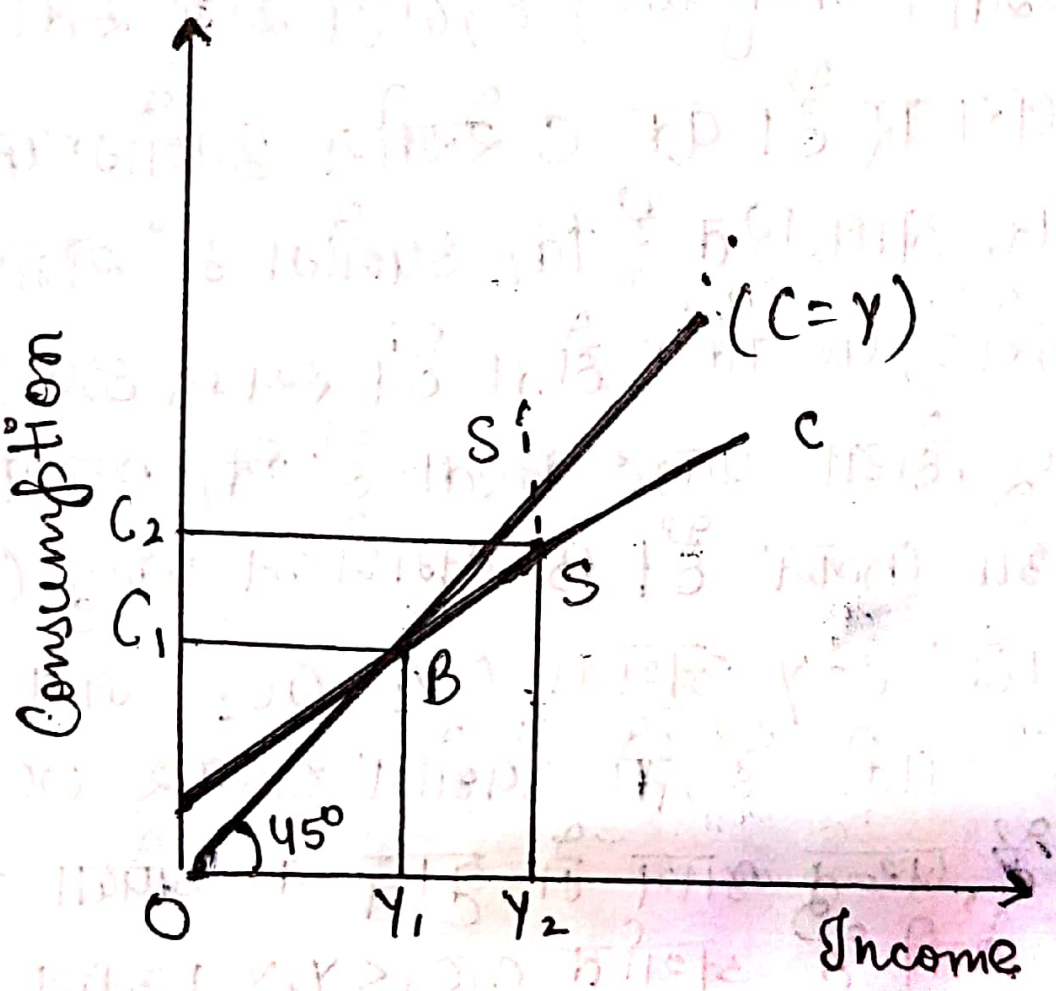

• चित्र 1

Scanned by CamScanner